८७६

श्री

नारदसोपेनुयरू

हिंदुस्तानी भाषामां तुलसीकृत

रामायण तथा बीजा ग्रंथ उपरथी

गुजराती [illegible] रागमां

बनावनार

मुनशी हरि[illegible]राय सुंदरलाल

[illegible]

[illegible]

अमदावाद[illegible]

[illegible]

[illegible]

किंमत-३ आणा [illegible] संवत [illegible]



નારદ શ્રાપ અનુગ્રહ.

॥શ્રી ગણેશાયનમઃ॥ ॥શ્રી સારદાયે નમઃ॥ ॥અથ શ્રી નારદ શ્રાપ અનુગ્રહ લિખ્યતે॥ ॥દોહરો॥ ॥

ગુણીજન સદગુરુ રાતના॥ વાંચો ધરી-
ને વહાલ॥ નારદ શ્રાપ નિદાન આ॥ પુસ્ત
ક પરમ રસાલ॥૧॥ તે પુસ્તક પ્રયત્નથી॥
છાપ્યું કરીને વહાલ॥ વિરમગામના વા
સી છુ॥ લઘુ સુત મગનલાલ ના॥ ॥
॥ ॥રાગ ધનાશ્રી॥ ॥શ્રી શિ
વસુતને લાગુ પાય જો॥ જેથી પાંમીને રમ
કથાય જો॥ સુમતિ આપો કુમતિ નીવા
રી જો॥ લંબોદરના કો હિતકારી જો॥ પા
પૂને સદગુણ અપાર સાર જો॥ તમે અનંત

णाछोज्ञाघारजाइया रिजताणतिसु
घज्ञापोजाडुमतिगांळनेदसणमांडूपे
जारश ।। धलणार ।। कुथफु
कुंनुगतेकरीाानाारहकामप्रपरिन्नेराातजु
नेपितमीन्तथीसुंणाराा थारेकामथिपि-
नेराा ३ाा ाकुंवुं ाा वा गंपनाश्रीाा ाा
रांकुरजोरल्यात्मार ह्वालनाथजाा ढुथकु
कुंतेसांलफोविद्सातजाानेथीनिलमन
निरमप पायजाा सघकु स्येरामररा्ष
जाारा ।। ाढपाा ।। ानारह
श्रापथी रायणप्रगटयोाालीघोलम
श्रीरांमपतेनीकृपातमने संलणाबुंा
सांलजन्ने गुणाप्र्यांमााराा किंमायेपने
डूपरयतसुंदराारम्यगुह्यनिरधार ाा

सुंदर सरिता गंगा। चेहन्यां।। प्रेम अ-
परमपार।।२।। कोयल ना टहुके स्वरता
णी।। मोर ऊच्चारे मलारा।। सोर डुरे सा
रस जन गहुसा।। नीर्मल ऊछट अपारा।।
३।। कुदती व्यंन कुंज जंगल अवणी वण
नागर वेला।। व्योम घटा घन स्याम मणे
लीया हंस डुरे कलोला।।४।। पवित्रा भ
भूषित बनणी।। आयरे अनुष्टान।।
शाकर्म भूषि ल्यां तप करे छा।। तप जप अ
ज्ञाना।।५।। वेद धुन्य मुख थी ऊचरता।।
एकरी स्हनीछ मंना।। धांन करे गंगा क
पी सद्भावे मंत्र विद्याना।।६।। तेज
वसर मांना रह्या आप्या।। ल्यां कि मणि रीगु
रुया।। रूपी थिर पवन नागणि पवना।।

उरमां कष्ट न मायता ॥ आरां दुःख देइ सं
मरण करतां ॥ त्यागी समाधी वीषेरा ॥ ना
रइ देइ तप जप केइ जीने ॥ नय नीत थयो
सुरेश ॥ ८ ॥ देव सर्वने चिंता पेठी ॥ भ-
णिया सुरवर सर्व ॥ इंद्र जोइ विचार
करीने ॥ ते जोमइन महागर्व ॥ ९ ॥ वि
नय करीने आसन आप्यां ॥ दीधां रनाध
रमाना ॥ इंद्रराय तव जो लिया ॥ नव
रकुं तमु वाण ॥ १० ॥ कोइ दिवस नारद रु
षिजे ॥ तप तप तथि आवीरयुं ॥ ने कु
ठम रुदीयो गजारं ल्ला ॥ आवुं काम नथी
करीयुं ॥ स्वा तेमारे संशय प्रगट्यो छे
॥ रसी इच्छा मनमांहे ॥ ते तणी तमे
शोध करो ते जोरीं गणछुं आंहेपार

॥ तमकृपाके तपस्वी नंनने॥ ७॥ तवा
नु छे क्षमा॥ जयघरनथी कहीशकुं तो मुज
थी॥ तमथी सौ सुजथामा॥ ८॥ हि
मगु ग्रामांनारद ऋषिजो॥ तपआरंभ्युं
सारा॥ करी कृपा तमो त्नेंगकरे तो॥ मां
नीरांहित अपारा॥ ९॥ सुरसहीत कुंथ
वनसुणीने॥ याल्यो नयघरके ता॥ न्यां
नारद७ तपकरे छे॥ त्यांकरीजो संकेत
॥ १०॥ वसंत ऋतु करी ततक्षण मां॥ आ
वेमोरविहंग॥ हंसकोकीला सारसाये॥
मुडा॥ दलनी नअंगपतंगा॥ ११॥ सहकु
कुमणदव पांजडीओनी॥ जीलीधुंय
घरायां॥ नवनीघि रंग सुगंधतामां॥
तीघना॥ अकुथायां॥ १२॥ ॥

वणाणप ॥तीव्रनादतंतुलग॥

॥८येंपुष्पजेहें ऊचरे ॥८॥मनिजपी

रूमडुरे॥ तेनो सुंणो जनावरे ॥पदा

॥ ॥ऽपुरनुं॥ ॥नवागबे

पाठीनो॥ब्रेष्माह्मणनो॥ ॥चाबे

तालमृदंगवीपंगा॥ नाचे अप्सरा नच-

वीधी रंग॥ ताणी स्वरने जेथे तारस॥

रंनाजोले राग मलार॥पा॥ रागजा

जेपनऊ घो मलारा॥ घनघोर घटाथई

सार॥जीली ऊर्धि तलातल ऊंजा॥दु

जीवनना नासेदुजा॥रा॥जग मृगपर

वणाचर सर्व॥ मन मो हीत थया छे जे

र्व॥ऊामवायु व्याप्यो आपा॥ कन्यांदुषी

जपेछे जपा॥ कुरु चालाग्ये प्रवेशनुं ऊाम

डोअजयफोगटछे थिरामा ॥ ३ ॥ नथी
सतुं मन्मथथी लगार ॥ नारद छे परी
भ्रजाण्या रा ॥ रा ॥ नारद डाम नव्याप्यो-
न्यारे ॥ पाजे पडी जो मन्मथ त्यारे ॥ प
॥ ४ ॥ जे मुनी जन हता आपणा ॥ कुण कीडर
पदरव आपणा ॥ ५ ॥ प्रेर्यां ठर्ईरे मुने जाठ
॥ त पलंग कुरवा निरधार ॥ तमतप
जपथी जीहिना सर्वा ॥ देव किंनरे मुज्या
गर्व ॥ ६ ॥ लयप्रगट्यो सरवने पेराभ्र
य त्नउरी जोवा व्यो नेटा र्ठर्ईरे न्नएगुंन
रे मुन्नरा ना ॥ भ्रसाजे नएणुं थायो गुंडा
न ॥ ७ ॥ जेम संरायफारी सौ थया ॥ मदे
मुनपर जाएगो ध्याय ॥ कुत्ते आपना ॥ दास
नो दास ॥ अमृत दृष्टिनी माग ॥ आरीसाद

ए माटे क्रोध तजने दुःखकारी ॥ कुंथ
पदरुधारी ॥ इति स्तुति ने वर्णीक
मा ॥ लर्ठ जे ठे पोताने धाम ॥ १२ ॥ हवे
रुडी ठ्या सारा ॥ करी हृदये तिव्र विग्यासा
दिवस लामां नार हगया ॥ मारां परित्रस
स्वने कह्या ॥ १० ॥ जमो कामने जीत्या जा
णा जेम मनो त्या श्रीमुनीराजा ॥ सुणी
पसौ विस्मय थ या ॥ धरी हाने प्रणीस्थ
नरुगया ॥ ११ ॥ त्यांथी म्याल्या कैलास
मो ल्लरा ॥ ज्यां हां शंभु जे ठ छे सार ॥ शि
वे दीधां आदरमान ॥ पूजन कीधी वीधीय
प्रमाण ॥ १२ ॥ कामयरित्रना रे कह्यां
घसहाशिवे ऊरमां लह्यां ॥ पवतारांदर
बोल्या वाण ॥ सांभळो मुनी सद्रुणखुल

रुआरजे विश्नुने करतावातां जं-
हांईथरी उत्पाताम्मारेक्केईने क्के
शेनहीं।। सर्वे वियार उरमांसहीहर
।। शांतुईं ह्रसानारहे नवमांनी।। त्यांथी
चाल्या विश्वे घरलगी।। करतपविण
ने करताच्याना।। त्यरले हमांसावीतान
।।पा।। क्षिरसागरमांनाारहगया।। मु-
निहेजि विश्नु उलाथया।। ऋषिसहीत
जेगजासना।। निरमणमनथिईधुपु-
जना।।८।। जोल्याविश्नुश्रीयुगरावा।।
कुमहयाशीधी महाराजा।। कांमयएन मु-
नियेकुह्यो।। वीरचित्ते सकुणहीरमांस-
ह्यो।।७।। ।।चलण।। ।।
मुभगंलीरतातवकुशी।। विश्नुजोल्यावां

गरे॥ सांख्य अने मुनिजन माहरा ७
तडुं निरधारेरे॥४॥ ॥कडखुं
जु॥ ॥राग मेदारा॥ ॥अने
हृदयमांमोह्यछे॥ तेने ज्ञान क्यांथी हो
य॥ जेअज्ञ जसत्य विलासी छे ते॥ सत्य
नमाने सोय॥१॥ तमे जब्रह्मपर्यंत
पाकडुं जाणियाछो महाराज॥ शीजार
जेडामतणो॥ कंठ छुं ते तमने जाणुं*
॥२॥ जक्त व्यापक मुनी तमे छो॥ योगी
तापस छे शा॥ शौद जायेनएतमतणां
॥त्यांशुं करे मन मथीशी*॥३॥ बौद्ध सो
कतवक्रोधथी पलटे॥ जेथाछो जपथा
ना॥ तमतप जागण शंकर केंशु॥ तपज
पतुं छ समानां॥४॥ विभुवचनतव

* जगज्जपनमाहरमणां * ईश्वर जेटलेंपांस्रो पुरुषपणे

त्न किधा मुनीने प्रगट्यो अभिमान।
म कृपाथी काम जीत्यो।। जे मनो त्याम
हा मुनिन्या।। पा।। घडी वार रहि त्यांथी चाल्या।
।। इरवा स्वर्ग लु जंता।। नारदने अभिमा
न वध्याथी।। विष्णु थया चिंतवंता।। हाण
नारदने अभिमान प्रगट्यो।। धुं करवो
उपाय।। ते हरी जागत वधया हुं शुं।।
तो जंते कोई हुं जयाया।। ओ।। माटे मूप
थी काढी नाजवो।। जेह हुं बधुं कामा।। जे
मचिन्या करि प्रभु पोते।। करवा लाग्या
कामा।। ते माया रूपि नगर वसाव्युं।। स
तया लन विस्तार।। श्री नीवास पीस्फु
अपणीत्यां।। शोभा जेपर म पारा।। न
।। नग्र पति सीज नीधरा नाम समरथ सुरम

थयंता ॥ हयगजरथ भट सुभट सुर
सामंत सहु संजुत ॥ १ ॥ तेहनी सुता
सिंधमोहनी नामे ॥ रूपगुणभंडार ॥ हा
वभावरसनी सुंदरि कन्या ॥ तेहने तणो न
हिं पार ॥ २ ॥ स्वयंवर शोभ निपरस्यो
छे ॥ आव्या जगणित भूप ॥ देश देशना
नरेश सोहे ॥ मंडप मांहे अनूप ॥ ३ ॥
छासठ नेन मंडप कर्यो ॥ कनक मय थि
स्तार ॥ आठने नमायण थंभा ॥ ब
मनोहर पार ॥ ४ ॥ पांचसो दिन रेश
ना आसन ॥ नाम प्रमाणे ठाम ठाम
कोटीये कुंडनी सोल ॥ मिनाकारी काम
॥ थयंता ॥ हयगजरथ कोटानकोटी रामा
गयल्लार अजने कायघसि नेहुनी अजंमल

गांगनथुनी सामे छे ग्रारथ्यारि
निधे तव आशान आव्यां॥ आदरमा
न समीत॥ अर्ग पाद्य थी पून्न डीधी॥
हृदये आराणी प्रीता॥ ६॥ धिर्य मोहनी
सुता हे जाडी॥ नारद ने निरधार॥ ह्रोना
यगुण सौ दे जीने॥ ने विधि लज्यो ति
खा॥ ७॥ ॥ ढुडखुं ढधुं॥ ॥
राग सारंग॥ ॥ हे जी मुनि येवि
रती विसारी जी॥ अकुवार सुधी रह्या
निहारी जी॥ ने लक्षण लूण्या मुन्यण
॥ पाम्या मो ह्य यागति शुन्य जी॥ १॥
राग सारंग॥ ॥ नारद जो रख्या
सांत्त परख्या॥ लक्षण देखतां न वद्र्या
या॥ स्वामि मण रीस मर थेजण कोर्दि॥

अछुत जगतपति समजेछे ॥ ९
के सद्गुण येराग्य जेने ॥ शीळ नियं
त्याग रसे तेने ॥ सर्वलक्षण कुं ज्यान
कही ॥ नारद जे त्यांथी ग्या ज्यां सही ॥
रा मुनी सोच करे मन मांही ॥ मा कहे
कुं ज्या जे वरवी सही ॥ जे भक्षारे मुनेव
रे नारी ॥ जेवुं यत्न करुं विचारी ॥ १०
जेम करीस मर्यो श्रीगोपाळ ॥ कीत क
विश्नुं भगत्यां तत्काळ ॥ विश्नु विसो की
यश्च जेनीरख्या ॥ रीको स्वरूप नारद
कराव्या ॥ शा काय जेउंजो त्या मुनीरा
या कहीं रूपाने या जे सहायां ॥ जापे हुं
पतमां जराव्या ॥ जेथी सरवरे मांहा कुं
जाप्या ॥ कुंछुं दास तमारो सोच ॥

रीने आपे मोकल्या तेथी वळ्युं रा०
मारी॥ कहुं छुं पर उपरपोस्वी मुरारी॥ ८॥
सुणी वचन नारदनुं सारा॥ विभुं कह्युं ज्या
जीरमो नमरा॥ बोल्या मृदुरस वचन धीर्ड
रा॥ सांभळो नारद मुनिशा॥ जाणेथी
सुधरे तमारां कामा॥ तेहुं कहुं छुं चाने छुं चिरां
म॥ अमे महहीने आप्युं रूप॥ अंतरध्यान
थया त्रिभुवन पाळटा॥ त्यांथी चाल्या श्री मु-
निराज॥ ज्यां छे स्वयंवर समाजा॥ मु
निमनमां हरखे घणेरा॥ रूप रुपे जिने पे
तातएवा रूडा॥ मुनि मनमां करे विचार॥
मळियुं रूप विभुनुं सारा॥ मुज मन मतेल
गा तमाम हीया मने कंन्या वरसे सही॥ १०॥
॥ मारे परणुं जे रंगाने सारा॥ सुंदर लोक

थुंअनेपंचमधारा॥ थिघमोहनीरेपेना
॥सरथवातेघणीसुजेहारी॥१॥ वर्ष
थपुरसमरणफलणा॥ जगतमांजड
तभमाणा॥ मादानाग्यतणोनहीपार
॥नारहजेमडरे थियाा॥२॥नार
हनीत्रणबुद्धिजणी॥ पिंतातुरथया
यरूपाणी॥ मुजमरउदतुंडीघुं साराउ
तूपहेतांनजाथेपार॥ ३॥ लजमुने
नेमोटाहं ता॥ नेत्रवांकांहोठसटडुंता
नाकुयीतुहास्यजहमुज॥ जेहहसथुंने
नीतुहज॥ ४॥ जेवीमुजछजीडी
थीहरी॥ तेथिणसडुणतुपमयतरीण
सजामाहेजेमसुनीराना॥ तूपमंडण
सुरसमाजारपो॥   ॥ वरण

॥ सुरसमानॅन्टपमंडण
अंछे॥त्यांआव्यामुनिराजने॥कुके
फरराहकुमतिवधी॥त्रम्नाहामनजकुल
रा॥पा॥मुख्मस्कुर तनसकृतमया॥जे
ठांथरिअजत्तिमान॥वधिकुटिलतामो
हथी॥वध्योजंगजज्ञान॥२॥ ॥
हुडंकुं॥पेमु॥ ॥राग ढाल॥ने
तमारदाहालेवो॥ ॥ते जवस
रमांनृगगणजेउी॥आव्यासत्नामोनॅ
रा॥विप्ररूपधरीनेजेठा॥नेवाएरित्र
विच्यारा॥१॥विघमोहनीनपमान
अहीने॥आवीसत्नामोनरा॥तवमु
निजेउीम्यीडोहडीथी॥पहेरवावरमा-
का॥रा॥मयकुरमुषनेछेनेपाळीहुनी॥

मानुंपालीआगणआपातयन
छडींन्यानिश्चार्थठाकुरेहृदयपरिल
ताउतानानाहनोपरितापेल्नेठनेतारीव
गणाकुसताल्नयाकुसताप्नसतापा-
सेआव्यातानारहजेमाल्न्यांयारेता
नारहजेमासोय्यकुरेछे हूरहू नीलजे
षेता कुंन्याजेवरमाप नआरोप्येता
उरमांपाल्न्याकुषेतापतानारहवत्ये
हूरगणगजेउताजोल्न्याभस्कुरीथीवाण
तआहोमुनीछमुप्नन्तुआेलण मांता
रातल्नासकुपमभमांणता ताणगणयन
नतयसांल्नफिनेसंषयप्रगत्योउराए
हाबसल्नामांथीउत्पातत्तसणताल्नो
कांउाहकुनीपुराताछाम्रुजन्नुषेछेतो

ट सरखुं ॥ के तां न जावे पाराको
न्याणा के रवेलागी ॥ जाण्यासला
मोलशा ॥ टाथांडर गणर्युनार ख्वोल्या
॥ सांभलण पापी तंना ॥ मुजमुजने छेत
मो के स्यामाटे ॥ घरने रादीस तंना ॥
॥ मरकुट मुजकुं तो माहावूं ॥ के सघा-
नुं थुडाम ॥ माटे आप दउंछुं तुने ॥
रकुने पापी जाठवंमाणथा ॥ घोरकुष्ट
जन्यो प्रगटनो ॥ कस्यानुं रुप जेहाव-
थीजम्बर मारा स्वलावलीं ॥ जंतेकुर
रो छेडाणथा ॥ जेम कुडीदूरी न्थमांले
युं ॥ मईउर मुजविशेषा ॥ आपदीधे सं-
तोषनयणियो ॥ कुरके कर्थरगापेर ॥

॥ ४२ ॥ ॥ चपकर्ण ॥ ॥ प

हरिभुजंगनेयुं जणमां ऋषिरासम्यो
परितापेरे॥ करे विचारमनमां ऋष
ष्येरे अषि मुनेश्रापेरे॥१॥ ॥
ढुंढुणा ढुणा ॥ ॥रागचिंतामणयेरे
पर्छे॥ मोम्होहणानीपेछे॥ ॥
मरहरमुज नर्छ पोतातणो क्रोधरू
राष्या ऋषिघणुं॥ हरडे जे चरडो पणीरमां
ही॥ नरथीप्यात्याकुमणापतीप्यांही
॥षामपिपापंथमांथीगीरधाशी॥ स्वा
थेस्तुंहिररात्कुमारी॥ मृदुवचनथीजे
ष्यारुरेरा॥ मुनीश्यांप्यात्याविकुपरि
रेरा॥रा॥ सुणीवचनने जीपन्योक्रोध
मायावसनवरुद्योजोथापेरसंपरारेरण
नेजमायाहैयेर्छवर्ष्णतिरायपाया॥

यारे सिंधु वलोव्यो सार।। मकाविष
रत्युं नीरधार।। ते नै शंकरने पायुं जाप
।। विश्वाधतितणा छो पापा।। १५।। जस्
त निकंदीयुं पछी ज्यारे।। देवादीकने
पायुं त्यारे।। लक्ष्मि सहीत निकलियां र
त्ना।। ते पोते लीधां करी प्रयत्न।। १६।। जर ध
साधक कुटिल सदा।। सुणी उपर करतो
भद।। निशादिन ताकरे कपट व्यहवार।।
तुं तो पापी जन परम पावन।। १७।। कपट मा
री पुतना मारी।। कपट करी कंसनी घ
सी।। कपटे ग्रह प्रवेश राज कुकरतो।। कप
टी केडे पडी नथी उरतो।। १८।। कपटमा
स्यो लवण घरत्तूपा।। कपरे चिंधाने कीधी
धुर्मा।। कपरे रुकमणी हरण कीधुं।। कपटे
* रुक्मिनीने

रीं छतएकुंमएणीलीधुंा।टा।कुपटेजरि
न्यरंगपरा।ज्यो।।कुपटेवैरवनेजकु
ज्यो।।कुपटेऊंघांकर्यांजकु डामा।।कुपट
टीकुपटीतुंतो।कुरामाएा।कुपटकुरीकुए
यवनजाप्यो।।जरासंघनेजकुरजेज
व्यो।।कुपटेनरहयकुपानारीकीधुं।।तेमां
तेंकुंप्रा।करुमकीधुं।। एास्यतंत्रथपछेकुजमा
कुरा।मा।थेजंकुरानथीकुंछेजरा।मन
छेछाजेकुंरुंछुं डामा।।नथीमणियोकुछेजा
त्निरामा।।एा।पुरीरकुनजापीमुकुने
।।मा।टेश्रापेएंछुतुनेरा।। कुरीननमले
नेनिरधारा।।रघुवंशमांथारोकुमार
।।मारीकुल्पना।स्त्रिकुरीनेमा।।तमतणी
कुररोकुंछेतेंमा।। मरकुर मुजमणिरस

करयो। तम संगे सउ संचरयो।।छ

न आप दीधो मुनि ल्यायो। हर्षि श्रीर

पढाव्यो त्यारे। मायासंठे दी दीन प्या

जा। नहीं लग्ने राळ रसाणा। पछा नहि

राळ कुमारी लणा। तव मुनिये ठर्युं निर-

धाणा। तेठि श्री हरी हर नी रचना।।ठु

रवा लाग्या स्तुति नहीं भणा।। पपाजो

ल्यो ठूर वचन कु नाथा। क्षमा करने ऊत्त

रसनाथा। पापप्रलय थयो रे। कुम तव जो-

ल्या थिमुं जे मा पदा थांक रनां नपने स

तनां मा। पापप्रलय थयो रे। तमा मारा

कर सम भिय यत्र कुठी ठछे मारा रे।। जेक

नाम पीत लव कुंभ तारो।।३।। जेम कही

थया अंतरध्यान।। नारद त्यांथी चाल्या

सुखघना॥ सत्यलोकमांथीत्याज
तजकृष्णमोहपरितापाघटा॥
यशा॥ ॥त्यांथीनारदऋषि-
ये आव्या॥ त्यांहां सत्यनिवासेरा॥ शि-
वशरण मुनिपासे आव्या॥ करता स्तु-
ति श्रीहरिरे॥५॥ ॥कडखुंमु॥
॥रागढाल॥ ॥आपअनुग्रहकरी
मुनिज॥ कृपाकरो निरधार॥ तव मुनि
जबोलियां तमे सांभलो हरकुमार॥
शापअनेराक्षसजनमलियाथारो॥ तेअंत
गोनहिपार॥ तुलसीजनथी अकृत जतरी
॥थारो समरजनपार॥ ताहरा
जनथी श्रीवैकुंठवासी॥ धररी मनुष्य
अवतार॥ तेनाहाथे मरणपामसो॥

अनुग्रहस्वावा॥उ॥नारदकहूंवचन
त्नशिने॥याख्याअनेथीरा॥जेफल
रेरामरावणा॥थया॥महारणधीरा॥वा
सूर्यतणा॥मुहारीथी॥केमपातारामूंण
छुपाया॥तेमदरीकरनु णथीसौ॥
प्रश्चितप्रलेथाया॥पा॥कथाकहीसंपु
रणताथी॥॥नारदस्वापनिदान॥सौ
मुधिजोने बिनतीकहूंछुं॥ मुकनतिज
स्वप्रमाणा॥दृ॥गायथीजेने सत्नेष
माकुधाकरे॥माहात्मा॥ज्ञानप्रगटीनिश्च
तीनेपामे॥कुकज्ञान निधिआत्मा॥णा
कुंडविकेशेलघुकिंकरछुं॥अणुंवढाव्यह
पापागुरुगणरससमाअविनाछैाप
हेपदअनमापसार॥तेमांतिसनउदिसमाकुर

ओसत्यकृष्णवार्ता॥ ग्रंथ मध्य
मांय ईथारथीछे॥ पूर्ण राधानीवा॥
रा॥ श्रा॥ अमरसुधाम सुणेनरा॥
पढेंथितेनाछो॥ अगहे मुनसी फरसी
पसौनोसो॥ अयलयश्री रणछोडजा॥
छा॥ इतिश्रीनारदमापाकृष्णहेरामराय
ण अवतार संपूरण समाप्ता ॥

छोपीराणटछे.

जाहेरपत्र.

आचोपडी॰ ओजानाथ माहाप्रभुनाम रेहवासी
धाम॰ मेहमदाबादना॰ तेमनी पासेथी मळशे॰ त्था
लीग्या नडुराम रेहवासी वीरमगामनातेनी
पासेथी मळशे॰